गुप्तकाल में मन्दिर स्थापत्य कला का निर्माण : एक अध्ययन

सुरेन्द सिंह*

भारतीय स्थापत्य कला में मन्दिर निर्माण शैली का विशेष महत्व रहा है। मन्दिर निर्माण वास्तु शैली का सम्बंध प्राचीन काल से विभिन्न सम्प्रदायों के अतिरिक्त भारतीय मूल जैन एवं बौद्ध धर्मो के साथ भी है। हिन्दु मंदिरों के साथ–साथ जैन एवं बौद्ध मंदिरों का प्राचीन भारत में निर्माण इसी अनुमान को बल प्रदान करता है कि मूर्ति पूजा की भावना से ही मन्दिर का विकास हुआ न कि किसी सम्प्रदाय विशेष से गुप्तकाल को भारतीय वास्तुकला का स्वर्णयुग कहा जाता है।[1] कुछ इतिहासकारों ने इस युग को क्लासिकल युग भी कहा है। इस युग में साहित्य और कला का विकास हुआ।[2] गुप्त काल से पूर्व मन्दिर वास्तुकला के अवशेष नहीं मिलते है मन्दिर निर्माण का प्रारम्भ इस युग की महत्वपूर्ण देन है। गुप्तकाल में मन्दिर स्थापत्य कला का विकास ही नही हुआ, बल्कि इसके शास्त्रीय नियम भी निर्धारित हुए। क्योंकि मन्दिर निर्माण के उद्भव का सम्बन्ध व्यक्तिगत देवता की अवधारणा से है। इस प्रकार भारत में देवपूजा की परम्परा बहुत प्राचीन रही है।[3] अभिलेखों से प्राप्त होने वाले मन्दिर निर्माण के संदर्भो से यह ज्ञात होता है कि तृतीय शताब्दी ईसवी तक बहुत कम हिन्दु देवालयों का निर्माण हुआ था। लेकिन गुप्तकाल में मंदिर निर्माण बड़ी तीव्र गति से हुआ। गुप्तकालीन युग वैदिक धर्म और ब्राह्मण संस्कृति के पुनरूत्थान का काल था।[4] बौद्ध धर्म के साथ विशेष रूप से स्पर्द्धापूर्वक प्रगति होने लगी थी। बौद्ध स्तूपों, विहार और चैत्यगृहों के साथ–साथ गुप्तकाल में मन्दिरों का विकास भी होने लगा था।[5] समुद्रगुपत के समय के एरण अभिलेख पाषाणमय किसी मंदिर अथवा अन्य धार्मिक वस्तु के स्थापित होने का उल्लेख करता है। गुप्तकाल ने भारतीय स्थापत्यकला को ऊँचाइयों तक ले जाने में अपना सहयोग दिया।[6]

गुप्तकाल में मन्दिर स्थापत्य कला का विकास/निर्माण–गुप्त काल भारतीय इतिहास में विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में एक समुन्नत एवं रचनात्मक युग था। समुद्रगुप्त के समय से लेकर श्रीहर्ष के शासन काल तक भारत के प्रमुख धर्मो, दर्शन साहित्य और कलाओं में जो चिरस्थायी प्रगति की उसकी समता परवर्ती काल में कभी नहीं हो सकी।[7] स्थापत्य के क्षेत्र में इस युग में नवीन प्रेरणा, पद्धति, और नवीन योजनाओं का उदय हुआ। गुप्तकाल के मन्दिरों के उदाहरण उनकी निर्माण विधि और कलाकृति की विविधताओं के परिचायक है। सादगी संतुलन और उपयोगिता उनकी विशेषताएं थी। अधिकांश मंदिर चपटी छत वाले तथा वर्गाकार है। गोलाकार और उंचे शिखर वाले मन्दिरों के उदाहरण भी उपलब्ध हुए हैं।[8] लेकिन गुप्तकालीन मन्दिर अधिकांश शिलाखण्डों से निर्मित है। कुछ गुप्तकालीन मंदिर शैलकृत है और बहुत कम ईटों से बनाये हुए है।[9] क्योंकि लगभग सभी गुप्तकालीन मन्दिर साधारण आकार लम्बाई, चौड़ाई के है। गुप्तकालीन हिन्दू मंदिरों की स्थापत्य पर बौद्ध स्थापत्य का विशेष रुप से स्तूप और चैत्यगृह की परम्पराओं का प्रभाव पड़ा था।[10] गुप्तकालीन मंदिरों के अवशेष अनेक स्थानों से प्राप्त हुए हैं, जैसे सांची, उदयगिरि, नाचनाकुठारा, देवगढ़, भूमरा, एरण, झांसी बेसनगर, भीतरी गांव, अहिच्छन्न गढवा, सारनाथ बौद्धगया आदि। क्योंकि इन मन्दिरों को गुप्ताकालीन स्वीकार किये जाने का एक आधार तो कुछ मन्दिर स्थलों से अभिलेखों की प्राप्ति रहा है।[11] इस युग के मन्दिर प्रारूप दृष्टि से एक गर्भ के मन्दिर धीरे–धीरे पंचायतन शैली में परिवर्तित हुए। मन्दिर वर्गाकार है इस विकास शैली के प्रमाण भूमरा एवं देवगढ़ के मन्दिर है। आयताकार योजना वाले मन्दिर अवश्य ही दक्षिण के चैत्य गुहाओं से सम्बन्धित रहें होंगे।[12] देवगढ़ के दशावतार मंदिर में गुप्तकालीन वास्तुशिल्प के लगभग सभी गुण विद्यमान है। क्योंकि बेतवा मंदिर में गुप्ताकलीन वास्तुशिल्प के लगभग सभी गुण विद्यमान है। क्योंकि बेतवा नदी के तट पर उपलब्ध होने वाले इस भग्न विष्णु मंदिर का निर्माण लगभग 5 फुट ऊँचे चबूतरे पर किया गया है।[13] यह लगभग 45) फुट वर्गाकार भूमि पर बना है। गर्भगृह बहार से 18 फुट और भीतर से 93/4 फुट है। इस मंदिर की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता उसका हसन्मुखी ऊपरी शरीर है । देवगढ़ का यह मन्दिर शिल्प और वास्तु के समन्वय का एक उच्चकोटि का नमूना प्रस्तुत करता है।[14] गुप्त युग के मन्दिरों में दर्रा (कोटा राजस्थान) का प्रस्तर–निर्मित शिव मन्दिर एक उल्लेखनीय वास्तुकला की रचना है। यह मन्दिर 74 फुट लम्बे 44 फुट चौड़े उठे हुए आसन पर स्थित है। सम्पूर्ण छत एक शिलाखण्ड़ से ढक दी गई है।[15] वासुदेव शरण अग्रवाल के विचारों में बनावट से यह मन्दिर सादगी, छोटा गर्भगृह, चपटी छत तथा अलंकरण व वास्तु विन्यास के लक्षणों के आधार पर इस मन्दिर को गुप्तकाल के प्रारम्भिक वर्षो में रखा जा सकता है।[16] गुप्त काल का एक सबसे पुराना मंदिर सांची के चैत्य–सभाकक्ष के बायें खड़ा है इसमें चारों ओर से घिरा हुआ एक गर्भगृह है और इसके सामने का मंड़प स्तंभों पर खड़ा है।[17] परवर्ती काल के सभी मन्दिरों के निर्माण के लिए यही खाका अपना लिया गया। गुप्त काल में गुफा मन्दिरों का भी निर्माण किया था। अजंता की गुफा मंदिरों में अधिकतर गुप्तकाल के ही माने जाते है। एलोरा के कैलाशनाथ मंदिर को प्राचीन भारतीय गुफा स्थापत्यकला का सर्वाधिक महत्वपूर्ण नमूना कह सकते हैं।[18] गुप्त काल में

***पीएच.डी. शोधार्थी प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार**

मूर्ति स्थापत्य कला विकास के शिखर पर पहुंच गई थी। क्योंकि इस युग के देवी–देवताओं को विष्णु के अवतारों में प्रस्तुत किया जाता है। गुप्तकालीन मूर्तिकला की महान उपलब्धि का अंदाजा सारनाथ की बुद्ध ध्यानस्थ और खड़ी मूर्तियों को देखकर लगाया जा सकता है।[19]

इस युग में चैत्य गुहों और स्तूपों के अनुकरण पर मन्दिरों का निर्माण किया गया। शोलापुर महाराष्ट्र का तेर मन्दिर कृष्णा जिले का कपोतंश्वर मन्दिर और राजगृह बिहार के मडियारमठ की गणना इसमें की जा सकती है। ये सभी गुप्तकालीन मन्दिर है क्योंकि ये भी सभी मन्दिर ऊँचे चबुतरे पर बने हैं। राजगृह का वर्तमान मडियारमठ एक शिवमन्दिर था। यह स्तूप की तरह बेलनाकार है।[20] गुप्तकाल में अनेक स्तूपों का निर्माण हुआ जिसमें ईंटों का अधिक प्रयोग किया गया। ईंटों से निर्मित स्तूपों में मीरपूर, सारनाथ का धम्मेख स्तूप तथा नालन्दा का मुख्य स्तूप उल्लेखनीय है।[21] पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में मीरपूर खास नामक स्थान पर एक महत्वपूर्ण स्तूप विद्यमान है जिसको चौकोर आधार पर बनाया गया है। इस स्तूप के निर्माण में नक्काशी से अलंकृत ईटों का प्रयोग किया गया है। यह स्तूप वास्तुकला में गुप्तकाल के प्रारम्भिक युग का स्मारक माना जाता है। इस प्रकार स्तूप स्थापत्य कला में भी गुप्तकाल का बड़ा योगदान रहा।[22] गुप्तकालीन सारनाथ के धमेक स्तूप का निर्माण भी ईटों से निर्मित है। यह गुप्त कालीन स्तूप 45 मीटर ऊँचा था। इसका प्राचीन नाम धर्मचक्र स्तूप था। इस स्तूप का निर्माण इसी स्थान पर माना जाता है कि जहां पर बुद्ध ने धर्म चक्र प्रर्वतन किया था। क्योंकि इस स्तूप का बौद्ध स्मारकों में विशेष महत्व माना जाता है। इसके उत्खनन से पता चलता है कि 110 फुट की गहराई पर प्रस्तर कार्य के पूर्व में ईंटों से निर्मित ढांचा था। गुप्त कालीन स्तूप स्थापत्य का भी भारतीय स्थापत्यकला के विकास कार्य में सहयोग रहा है।[23]

उपसंहार : गुप्ताकालीन स्थापत्य कला का भारतीय स्थापत्य कला पर बहुत प्रभाव पड़ा। क्योंकि गुप्तकालीन वास्तुकला के सूक्ष्म अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि वास्तु रचना के दोनों ही पक्षों में सौन्दर्य तथा शिल्प में नवीनता एवं सृजनात्मकता का सूत्रपात हुआ। गुप्तकालीन स्थापत्य कला की सौन्दर्यशीलता के सम्बन्ध में भी यह कहा जा सकता है कि इस काल में नव कल्पनाओं एवं अपूर्व प्रतिमानों का विकास हुआ था। क्योंकि इस युग के कार्यकाल में स्थापत्य कला चरम उत्कर्ष पर पहुंच गई थी। क्योंकि गुप्त काल शासकों ने अपने–अपने शासनकाल में स्थापत्य को बढ़ावा दिया। गुप्तकालीन शासकों ने अपने समय में मन्दिर स्थापत्यकला, स्तूप स्थापत्य गुहा मन्दिरों की स्थापत्य कला को आगे ले जाने में अपनी भूमिका निभाई है। भारतीय स्थापत्यकला के अन्दर गुप्तकालीन मन्दिर स्थापत्य कला का भी अपना ही स्थान रहा है। भारतीय स्थापत्य कला में अपना अधिक योगदान देने के कारण गुप्तकाल को स्वर्णयुग, क्लासिकल युग भी

कहा जा सकता है। वर्तमान में भी गुप्तकालीन स्थापत्यकला उनके मन्दिरों में देखने को मिलती है। देवगढ़ का दसअवतार मन्दिर, नचनाकुठार का शिव पार्वती मन्दिर, सारनाथ का स्तूप का मंदिर आदि। गुप्तकालीन स्थापत्यकला की अजन्ता और एलोरा की गुफाओं में भी देखा जा सकता है। इस प्रकार गुप्तकालीन स्थापत्य कला का भारतीय स्थापत्यकला को बनाने में बड़ा सहयोग रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्त, परमेश्वरी लाल, भारतीय वास्तुकला – वाराणसी, 1989, पृ. 66
2. सेंगर, शैलेन्द्र, प्राचीन भारतीय इतिहास एटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली 2005, पृ. 327
3. उपाध्याय, वासुदेव, प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मंदिर घटना 1972, पृ. 211
4. सरकार, दिनेशचन्द्र, सेलेक्ट इनस्क्रिप्शन्स, पृ. 32
5. गुप्त परमेश्वरी लाल, गुप्त साम्राज्य वाराणसी, 1970, पृ. 608
6. गुप्त परमेश्वरी लाल, पूर्वोद्धृत, पृ. 6010
7. बनर्जी, राखलदास, द एज ऑफ इम्पीरियल गुप्त पृ. 138–39
8. ब्राउन, पर्सी, इण्ड़ियन आर्किटेक्चर बम्बई, 1959, पृ. 49
9. सेंगर, शैलेन्द्र, पूर्वोद्धृत, पृ. 32
10. जोशी, महेशचन्द्र, भारतीय कला, पृ. 166
11. जोशी महेशचन्द्र, पूर्वोद्धृत, पृ. 168
12. झा, डी.एन प्राचीन भारत एक रूप रेखा, मनोहर पब्लिशर्स दिल्ली 2010, पृ. 116
13. सहाय, शिवस्वरूप, भारतीय कला, प्रकाशक, स्टूडेन्टस फ्रेन्डस इलाहाबाद 1999, पृ. 160
14. उपाध्याय, उदय नारायण, भारतीय स्थापत्य कला प्रकाशक, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2001, पृ. 142
15. पाण्डय, जयनारायण, भारतीय कला, इलाहाबाद, 1993, पृ. 111
16. बाजपेयी, कृष्णदत, भारतीय वास्तुकला का इतिहास, लखनउ, 1972, पृ. 143
17. शुक्ल, द्विजेन्द्रनाथ, ''भारतीय स्थापत्य'', प्रकाशक, हिन्दी समिति लखनऊ, 1968, पृ. 347
18. जोशी, महेशचन्द्र, ''युग–युगीन भारतीय कला'' राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर 1995, पृ. 160
19. सरकार दिनेशचन्द्र, पूर्वोद्धृत, पृ. 40
20. अड़यार लाइब्रेरी बुलेटिन, 1962 (वाल्यूम–26)
21. स्मिथ वी.ए., इंडियन स्कल्पचर ऑफ दा गुप्ता पिरियड ए.डी. 300–650, पृ. 49
22. कनिंघम रिर्पोटस, वॉल्यूम–XXI, पृ. 95–97
23. जोशी, महेश चन्द्र, पूर्वोद्धृत, पृ. 161